

कुमार जीवन - 10

अव्यक्त बापदादा (11-03-1971) :-

➡ _ ➡ कुमारों का सदा प्योर और सतोगुणी रहने का यादगार कौन-सा है, मालूम है? सनंत कुमार। उन्हीं की विशेषता क्या दिखाते हैं? उन्हीं को सदैव छोटा कुमार रूप ही दिखाते हैं। कहते हैं -उन्हीं की सदैव 5 वर्ष की आयु रहती है। यह प्युरिटी का गायन है। **जैसे 5 वर्ष का छोटा बच्चा बिल्कुल प्योर रहता है ना। सम्बन्धों के आकर्षण से दूर रहता है।** भल कितना भी लौकिक परिवार हो लेकिन स्थिति ऐसी हो जैसे छोटा बच्चा प्योर होता है। वैसे ही प्योरिटी का यह यादगार है। कुमार अर्थात् पवित्र अवस्था।

➡ _ ➡ उसमें भी सिर्फ एक नहीं, संगठन दिखलाया है। दृष्टान्त में तो थोड़े ही दिखाये जाते हैं। तो यह आप लोगों का संगठन प्योरिटी का यादगार है। **ऐसी प्योरिटी होती है जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही नहीं हो। ऐसी स्थिति यादगार समान बनाकर जानी है।**

➡ _ ➡ भट्टी में इसलिए आये हो ना। बिल्कुल इस दुनिया की बातों से, सम्बन्ध से न्यारे बनेंगे तब दैवी परिवार के, बापदादा के और सारी दुनिया के प्यारे बनेंगे। वैसे भी कोई सम्बन्धियों से जब न्यारे हो जाते हैं, **लौकिक रीति भी अलग हो जाते हैं तो न्यारे होने के बाद ज्यादा प्यारे होते हैं।** और अगर उन्हीं के साथ रहते हैं वा उन्हीं के सम्बन्ध के लगाव में होते हैं तो इतने प्यारे नहीं होते हैं। वह हुआ लौकिक।

➡ _ ➡ लेकिन यहाँ न्यारा बनना है - ज्ञान सहित। सिर्फ बाहर से न्यारा नहीं बनना है। मन का लगाव न हो। जितना-जितना न्यारा बनेंगे उतना-उतना प्यारा अवश्य बनेंगे। अब अपनी देह से भी न्यारे हो जाते हो तो वह न्यारेपन की अवस्था अपने आप को भी प्यारी लगती है - ऐसा अनुभव कब किया है? जब अपनी न्यारेपन की अवस्था अपने को भी प्यारी लगती है। तो लगाव से न्यारी अवस्था प्यारी नहीं लगेगी? **जिस दिन देह में लगाव होता है, न्यारापन नहीं होता है तो अपने आप को भी प्यारे नहीं लगते हो, परेशान होते हो। ऐसे ही बाहर के लगाव से अगर न्यारे नहीं होते हैं तो प्यारे बनने के बजाय परेशान होते हैं।** यह अनुभव तो सभी को होगा। सिर्फ ऐसे अनुभव सदाकाल नहीं बना सकते हो। ऐसा कोई है जिसने इस न्यारे और प्यारेपन का अनुभव नहीं किया हो?

➡ _ ➡ अपने को योगी कहलाते हो। जब अपने को सहज राजयोगी कहलाते हो तो यह अनुभव नहीं किया हो, यह हो नहीं सकता। नहीं तो यह टाइटिल अपने को दे नहीं सकते हो। योगी अर्थात् यह योग्यता है तब योगी हैं। नहीं तो फिर अपने परिचय में यह शब्द नहीं कह सकते हो कि हम सहज राजयोग की पढ़ाई के स्टूडेंट हैं। स्टूडेंट तो हो ना। स्टूडेंट को पढ़ाई का अनुभव न हो, यह हो नहीं सकता। हाँ, यह जरूर है कि इस अनुभव को कहाँ तक सदाकाल बना सकते हो वा अल्पकाल का अनुभव करते हो। यह फर्क हो सकता है। लेकिन जो पुराने स्टूडेंटस् हैं उन्हीं का अनुभव अल्पकाल नहीं होना चाहिए। **अगर अब तक अल्पकाल का ही अनुभव है तो फिर क्या होगा? संगमयुग का वर्सा और भविष्य का वर्सा-दोनों ही अल्प समय प्राप्त होगा।** समझा। जो पूरा समय वर्सा प्राप्त करने का है वह नहीं कर सकेंगे। अल्प समय करेंगे। तो इसी में ही सन्तुष्ट हो क्या ?

➤➤ न्यारापन किस किस से हो ?

➤ ➤ ➤ देह से न्यारापन

➤ ➤ ➤ संसार से न्यारापन

➤ ➤ ➤ सम्बन्धो से न्यारापन

➤➤ देह से न्यारापन

➤ ➤ ➤ चलते फिरते ऐसे अनुभव होगा जैसे

→ जैसा देह है ही नहीं

- यह बहुत ही सुन्दर और बहुत ही प्यारी अवस्था है
- दूसरों का देह भी नहीं दिखाई देगा
- देह में रहते हुए भी देह से अलग

➤ ➤ ➤ योग के अनुभव

→ न्यारेपन की अवस्था में किये जाते हैं

- देह में जितनी आसक्ति होगी.... अनुभव उतने ही कम होंगे
-

➤➤ इस ब्राह्मण जीवन में न्यारेपन का अनुभव कैसे करें ?

➤ ➤ ➤ आत्मा अभिमानी स्थिति का अभ्यास

➤ ➤ ➤ फ़रिश्ता स्वरूप का अभ्यास

➤ ➤ ➤ पांच स्वरूपों का अभ्यास

➤ ➤ ➤ रूहानी ड्रिल का अभ्यास

➤ ➤ ➤ मृत्यु की तैयारी

➤ ➤ ➤ मृत्यु का चिन्तन

➤ ➤ ➤ ज्ञान का चिन्तन

→ जो अवस्था योग से प्राप्त होती है

- वही अवस्था ज्ञान के श्रेष्ठ चिन्तन से भी प्राप्त होती है

► ज्ञान का चिन्तन इतना ऊपर चला जाये की उस चिन्तन की धारा में संकल्प शांत हो जाएँ

► दूसरों को ऐसा अनुभव हो जैसे वह शक्ति और शान्ति के झरने के नीचे बैठे हैं

→ जो गाय नहीं उगारती.. उसे बीमार कहा जाता है

- जो बच्चे मनन नहीं करते... उसे बीमार कहा जाता है...

➤ ➤ ➤ वैराग्य का अनुभव

➤ ➤ ➤ बीमारियों का चिन्तन

➤ ➤ ➤ बुढ़ापे का चिन्तन

➤ ➤ ➤ शरीर की आवश्यकताएं दिन प्रतिदिन कम होती जाएँ

→ एक तपस्वी को बहुत चीज़ों की आवश्यकता नहीं

- जितने साधन कम... साधना उतनी तीव्र होगी

- चेक करो... कौन कौन सी वस्तुएं / उपकरण / Devices /

Instruments / Gadgets हमें बांधे हुए है.... जिनसे हम मुक्त हो सकती है...

- बहुत सी वस्तुओं को हमने आवश्यक मान रखा है... पर वह आवश्यकता नहीं भोग है

- ब्राह्मण जीवन त्यागी जीवन है

▶ त्याग की शिखा प्रज्ज्वलित होनी चाहिए

▶ स्वयं को भोग विलासिता के जीवन से मुक्त कीजिये

»» _ »» इन सब बातों का चिंतन कम करें

→ देह की सुख सुविधायें

- अगर Fan चल रहा है तो भी ठीक... अगर Fan नहीं चल रहा है तो भी ठीक

→ देह की भूख

→ देह की प्यास

→ देह की थकान

»» _ »» दीन दुखियों का चिंतन

→ ऐसे लोग जो बीमार हैं

- पर इलाज़ के लिए पैसे नहीं है

»» _ »» Beggary Part का चिंतन करें

→ दादियों की तपस्या और संघर्ष का चिंतन करें

»» _ »» चिंतन के साथ साथ अनुभव भी करें

→ गहराई में वो चला जाए

- चेतना की परतों में वो समा जाए

»» _ »» अपनी भूख को नियंत्रित कीजिये

→ ब्राह्मण जितना खा रहे हैं... उसकी उन्हें आवश्यकता नहीं है

- जिसे भोजन से वैराग नहीं... वह त्यागी और तपस्वी भी नहीं बन सकता

»» _ »» अल्प काल के सुखों का त्याग

→ सुखों में डूबे हुए व्यक्ति को वैराग नहीं आ सकता

→ अल्पकालीन सुखों में डूबे हुए व्यक्ति को परमात्म स्नेहका अनुभव नहीं हो सकता

- देह के भोगों का त्याग करना ही होगा

»» _ »» नींद का त्याग

→ जिसे नींद बहुत ज्यादा प्रिय लगती है

- वह योगी कैसे बन सकता हैं ?

